IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

Impact Factor: 5.731

Volume 8, Issue 1, August 2021

Hkkjr o"kZ esa bLyke dk vkxeu ,oa izHkko

M,- mn;Hkku ;kno

vflLVsaV izksQslj] fgUnh

राजकीय महिला महाविद्यालयए अम्बारी, आजमगढ़

भारत वर्ष विभिन्न धर्मो, जातियों एवं संस्कृतियों का बहुभाषिक राष्ट्र है। इस देश की क्षमता हमेशा से धर्म एवं संस्कृतियों को पचाने की रही है। इस राष्ट्र में दो महत्वपूर्ण धर्म हिन्दु तथा मुस्लिम इस की चर्चा के विषय रहे। यहाँ मुसलमानों का आगमन कई रूपों में मिलता है व्यापारियों के रूप में, अपना राज्य स्थापित करने वाले शासको के रूप में तथा व्यापारियों के रूप में। हिन्दू–मुस्लिम सम्बन्धों को अगर गहराई से देखा जाय तो फकीरों और व्यापारियों, ने आमजन के इस धर्म को प्रभावित करता गया, या यों कह लें कि भारत वर्ष अब इस धर्म को भी अपने अंदर समेटने लगा।

भारत का सम्पर्क मुसलमानों से पहले राजनीतिक न होकर, वह व्यापारियों तथा फकीरों के माध्यम से हुआ। व्यापारियों तथा फकीरों द्वारा जो मुस्लिम धर्म बढ़ा वह उनमाद की तरह नही बल्कि एक जीवन पद्वति के रूप में बढ़ा। भारत में इस्लाम का आगमन सर्वप्रथम 7वीं शताब्दी में प्रारम्भ होता है। अरब व्यापारियों का पहला बेड़ा सन् 636ई0 में आया। ये व्यापारी और फकीर भारत वर्ष में पश्चिमी तट पर बस गए और उन्होंने व्यापार के साथ अपने धर्म से यहाँ के लोगों को प्रभावित किया। इन्हीं लोगो के प्रभाव से उस समय लोगों ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया। यह परिवर्तन स्वेच्छा या दबाव के कारण नहीं था।

इस्लाम का आगमन राजनीतिक स्तर पर आठवीं शताब्दी में आरम्भ होता है। इसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण मुहम्मद बिन कासिम था। उसका आक्रमण भारत वर्ष पर 712 ई0 में होता है। मुहम्मद बिन कासिम ने आक्रमण करके सिन्ध जीत लिया। दसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षो तक वे लोग केवल सिन्ध तक सीमित थे। अरब अभियान के लगभग 300 वर्षो के पश्चात तुर्की के आक्रमण प्रारम्भ हुए। परिणाम स्वरूप ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ से भारत तुर्क मूल के मुस्लिम विजेताओं का मैदान बन गया। अरब लुटेरे थे परन्तु तुर्क यहॉ अपना शासन स्थापित करके इस्लाम स्थापित करने आए थे। उस समय भारतीय राज्य परस्पर युद्वों में लगे हुए थे। वे पराजित हुए, तदोपरान्त उत्तरी भारत में तुर्क विजेताओं का एक विशाल राज्य स्थापित हो गया। इसके बाद तुर्कों ने दक्षिण में भी अपनी सत्ता स्थापित कर ली और भारत तथा कथित मुस्लिम विश्व की परिधि में खिंच आया।

जब भारत के राजा आपसी मुद्दो में लगे हुए थे उस समय तुर्को ने आक्रमण प्रारम्भ कर दिए। 986–87ई0 में सुबुक्तगीन ने आक्रमण प्रारम्भ कर दिए। इसके बाद महमूद गजनवी का आक्रमण हुआ। यह आक्रमण अत्यधिक भयावह और विनाशकारी था। उसने सन् 1000ई0 से 1026ई0 के मध्य 17 बार आक्रमण किए। गजनवी मंदिरों को नष्ट करता तथा राजाओं की कई पीढ़ियों द्वारा संचित विपुल सम्पदा को लूटकर लौट जाता। उसने अपना शासन पंजाब तक ही सीमित रखा। अहमद निबल्तगीन ने सुदूरवर्ती क्षेत्रों पर आक्रमण किए।

गजनी के तुर्कों के बाद गोर के शासकों के आक्रमण प्रारम्भ हुए। इसमे मुहम्मद गोरी ने पृथ्वीराज चौहान पर आक्रमण किया। पहली बार वह पराजित हुआ, परन्तु दूसरी बार 1192 ई0 में पृथ्वीराज को पराजित किया। दिल्ली पर आधिपत्य जमाने के बाद गोरी ने कन्नौज के राजा जयचन्द्र को भी (1194ई0) में पराजित किया। थोड़े ही समय के अन्तराल में सारे दोआब क्षेत्र पर उसका अधिकार हो गया। गोरी के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक (1206–1210ई0) ने अपने को भारत में गोरी इलाकों का आजाद सुलतान घोषित कर दिया और दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया। इस प्रकार दिल्ली सल्तनत की स्थापना हुई। सल्तनत काल

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 5.731
Volume 8, Issue 1, August 2021

(13वीं–15वीं शताब्दी)। इस युग में गुलाम वंश, खिलजी वंश, तुगलक वंश, सैयद वंश और लोदी वंश इस काल के प्रमुख राजवंश रहे।

इन लोगो के पश्चात दिल्ली पर मुगलों का अधिकार हो गया। 1526ई0 में पानीपत की लड़ाई में इब्राहीम शाह लोदी को परास्त कर, फारगना के पूर्व शासक, सैमूद वंशी जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर ने दिल्ली पर नियंत्रण स्थापित कर लिया। मुगलों ने सोलहवीं शताब्दी से लेकर 18वीं शताब्दी तक भारतवर्ष पर शासन किया। इन शासकों ने भारत के बचे हुए हिस्से को भी जीतकर अपने अधीन कर लिया। बाबर, हूमायूँ, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ तथा औरंगजेब मुगलकाल के प्रसिद्व शासक हुए।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि भारतवर्ष में इस्लाम का प्रथम प्रवेश व्यापारी और फकीरों के रूप में हुआ। कालान्तर में मुहम्मद बिन कासिम का आक्रमण हुआ और तमाम आक्रमणकारियों के लिए भारतवर्ष का दरवाजा खुल गया।

इस्लाम अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ शान्ति में प्रवेश करना अतः मुस्लिम वह व्यक्ति है जो परमात्मा और मनुष्य के साथ पूर्ण शान्ति का सम्बन्ध रखता हो। अतएव इस्लाम शब्द का लाक्षणिक अर्थ होगा वह धर्म जिसके द्वारा मनुष्य भगवान् की शरण लेता है तथा मनुष्यों के साथ पूर्ण अहिंसा एवं प्रेम का बर्ताव करता है। इस्लाम का यही रूप अरब व्यापारियों तथा फकीरों द्वारा आया, वही इस्लाम का वास्तविक रूप था। यह रूप मजहब की हैसियत से आया था और इसके मजहब की सच्ची आत्मा वर्तमान था। ये लोग अपनी बात को तर्क संगत ढंग से लोगों के सामने अपनी बात रखते जिसे स्वीकार करना या अस्वीकार करना व्यक्ति की अपनी इच्छा पर निर्भर करता था।

इस्लाम का दूसरा रूप मुहम्मद बिन कासिम के साथ आया, वह पहले वाले रूप से एकदम भिन्न था। इस्लाम का यह रूप राजनीतिक शक्ति के साथ भारत आया था। लोगों को विवश होकर इस रूप को स्वीकार करना पड़ा। इनका हर आक्रमण भारतवर्ष पर काफिरों के खिलाफ 'जिहाद' नाम से हुआ और हर अमानवीय कार्य इस्लाम के नाम पर किया। 'जिहाद' के बारे में सत्यकेतु विद्यालंकार ने लिखा– '' इस्लाम की शिक्षाओं के बारे में जिहाद का महत्वपूर्ण स्थान है। जिहाद का अर्थ है धर्मयुद्व। .... मुस्लिम धर्माचार्यों के अनुसार दो प्रकार के देश होते हैं, जिन देशों के निवासी मुसलमान हों, उन्हें वे 'दारूल इस्लाम'' (शांतिमय देश), और जहाँ इस्लाम का प्रचार न हो, उसे ''दारूलहरब'' (युद्वस्थली) समझते थे। बाद के मुस्लिम आचार्यों का मत था, 'दारूल हरब' के खिलाफ 'जिहाद' करना और उनको जीतकर इस्लाम के झण्डे के नीचे ले आना, मुसलमानों का धार्मिक कर्तव्य है।''[1]

भारत पर इस्लाम का हमला कभी नहीं हुआ। तुर्की, अफगानों, मंगोलों और मुगलों ने इस धर्म की ओट में भारत पर आक्रमण किया। ये सब बर्बर थे और इस्लाम से अनभिज्ञ थे। पं0 जवाहर लाल नेहरू ने लिखा है, ''इस्लाम को हिन्दुस्तान में एक मजहबी और राजनीतिक रूप में आकर बहुत से मसलों को खड़ा करना था। लेकिन यह बात ध्यान में रखने की है कि हिन्दुस्तानी परिस्थितियों में फर्क लाने में बहुत जमाना लग गया। हिन्दुस्तान के बीचो–बीच पहुँचने में उसे करीब छः सौ वर्ष लगे और जब वह यहाँ राजनीतिक विजयों के साथ पहुँचा, उस समय वह खुद बहुत बदल चुका था और इसके अलमवरदार दूसरे ही लोग थे।''[2] स्पष्ट है कि भारतवर्ष में इस्लाम का प्रवेश एक शुद्व राजनीतिक घटना थी। उसे एक साम्प्रदायिक रूप बेवजह दिया गया।

भारतवर्ष की विशेषता रही है और इतिहास साक्षी है कि इस देश में जितने आक्रान्ता आये, हिन्दू धर्म ने उन्हें किसी न किसी रूप में आत्मसात कर लिया। इस संदर्भ में ब्रिटिश पीटनी लैम्ब ने लिखा, ''शताब्दियों से ऐसा होता आया था कि एक बार असली लड़ाई खत्म हुई नहीं कि हिन्दू धर्म अपनी व्यापक सहिष्णुता के द्वारा सभी आगन्तुक आक्रमणकारियों को आत्मसात करने

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 5.731
Volume 8, Issue 1, August 2021

में सफल हो जाया करता था। जो लेकिन हिन्दुत्व इस तरह मुसलमानों पर काबू नहीं पा सका। मुसलमानों का बिल्कुल सुस्पष्ट, एक रूप, साफ और आत्मविश्वासी इस्लाम धर्म, हिन्दू धर्म के विशाल, जटिल, सूक्ष्म, बहुगुणी, आत्मविरोधी पिंड में विलीन होने के लिए तैयार नहीं था।''[3] यही कारण है कि जिससे शासकीय प्रवृति के साथ आया हुआ इस्लाम हठी प्रवृत्ति का हो गया।

मुस्लिम शासकों के मनमाने अत्याचारों के बाद भी इस्लाम एक मात्र धर्म नहीं बन पाया। इतिहासकार को0अ0 अन्तोनोवा ने लिखा है, ''नये विजेता भारत अकेले नहीं आए थे– उनके पीछे–पीछे उनके सम्बन्धी और कबीले वाले भी यहाँ आने लगे। अन्य देशों से मुस्लिम विद्वान और शायर भारतीय सुलतानों के दरबार में एकत्र होने लगे। नतीजे के तौर पर मुस्लिम आबादी बढ़ने लगी और कुछ इलाकों में तो आबादी में मुसलमान ही बहुसंख्यक हो गए। उदाहरण के लिए बंगाल को लिया जा सकता है, जहाँ बौद्व धर्म के अपकर्ष के बाद भूत पूर्व बौद्वों की बड़ी संख्या में बौद्व धर्म दीक्षित किया गया। लेकिन अन्य मुस्लिम देशों के विपरीत भारत में इस्लाम दोनों मुख्य धर्मो में से एक ही बना रहा और कभी भी एक मात्र धर्म नहीं बन पाया।''[4]

मध्यकालीन मुस्लिम शासकों ने हिन्दुओं पर काफी अत्याचार किये। कुछ शासक दुराग्रह की भावना से मुक्त भी रहे। यह बात खास तौर से अकबर के ऊपर लागू होती है। उसने हिन्दुओं को बराबर का स्थान दिया। सभी करो को समाप्त कर दिया। अकबर का प्रयास था कि दोनो धर्मो के लोग आपसी सद्भाव और भाईचारे के साथ रहें काफी सीमा तक उसका यह प्रयास सफल भी रहा। परन्तु उसके उत्तराधिकारियों के शासन काल में दोनो धर्मावलम्बियों के बीच की दूरी बढ़ गयी। हिन्दुओं और मुसलमानों का सम्बन्ध पुनः पूर्ववत् हो गया।

मुस्लिम आक्रमणकारियों और शासको ने हिन्दू जनता के साथ कुछ अमानवीय कार्य किए जिससे पारस्परिक घृणा का उदय हो रहा था परन्तु उनकी प्रवृति सत्तात्मक थी वे सत्ता के लिए लड़ रहे थे। ये बात अलग है कि उन्होंने धर्म का भी सहारा लिया। डॉ0 रफीक जक़रिया लिखते है'– '' फिर भी यह उल्लेखनीय है कि दिल्ली सल्तनत के दौरान हिन्दू अधिकारियों और मुस्लिम शासकों के रिश्तों में कभी कड़वाहट नहीं आई और न ही दोनों समुदायों के बीच ऐसा कोई विषाक्त वातावरण बना। राजधानी में अलवत्ता समय–समय पर अशान्ति होती रहती थी, लेकिन और जगहों पर, जहाँ क्षेत्रीय सूबेदारों ने स्वायत्त सत्ता स्थापित कर ली, हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच रिश्ते यथा सम्भव सौहार्दपूर्ण होते थे। इस प्रक्रिया में भक्ति आंदोलन ने मदद की।''[5]

भारत वर्ष में मुसलमानों की सत्ता स्थापित हो जाने से यहाँ हिन्दू और मुस्लिम संस्कृतियाँ आपस में टकरायी। जब दो विरोधी वस्तुयें आपस में टकराती हैं तो जाने–अनजाने एक दूसरे को प्रभावित करती है। ठीक यही स्थिति हिन्दू और मुस्लिम संस्कृति की भी हुयी। इन दोनो संस्कृतियों के आपस में टकराने से सेतु का कार्य करने वाली एक नयी संस्कृति ने जन्म लिया। इस संस्कृति का प्रभाव समाज पर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है, जो पूर्ववर्ती संस्कारों से थोड़ा हटकर है। भारतवर्ष पर तुर्की एवं अफगानों के आक्रमण का प्रभाव दो रूपों में पड़ा। प्रथम, हिन्दुओं ने संघर्ष में भाग नहीं लिया और भाग कर दक्षिण की ओर चले गये। ये लोग समाज में अपने वर्ण व्यवस्था को और अधिक कड़ा कर करके अपनी संस्कृति और समाज की रक्षा करने लगे। इस संदर्भ में दिनकर ने लिखा है, '' अपनी रक्षा के प्रयास में हिन्दुत्व घोंघें की तरह सिकुड़कर अपनी खोली में छुपने लगा। जात–पांत के नियम उसने कठोर बना लिए। लड़कियों का बचपन में ब्याह आम बात हो गयी और छुआछूत की भावना और भी भयंकर हो उठी।''[6] द्वितीय, हिन्दुओं ने मुसलमानों का विरोध किया। परन्तु पराजित होकर उन्हें विवश होना पड़ता तथा

परिस्थितियों से समझौता करना पड़ा। इसके अलावा यहाँ का मूल निवासी न होने के कारण मुसलमान शासकों को सत्तात्मक संचालन में अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता था। इन परेशानियाँ को दूर करने के लिए उन्हें आवश्यक था कि ये हिन्दुओं से अपना सम्बन्ध स्थापित करें। मुसलमानों ने हिन्दू स्त्रियों से विवाह किया और ढेर सारे हिन्दू मुसलमान बने। परिणाम स्वरूप मुस्लिम समाज में हिन्दू संस्कारों का समावेश हो गया। मुस्लिम समाज सामाजिक समानता का समर्थक था। परन्तु सब धीरे–धीरे उनके समाज में ऊँच–नीच और छुआ–छूत की भावना पनपने लगी। पहले मुसलमान मूर्तिपूजा के विरोधी थे परन्तु अब कुछ देवियों की पूजा करने लगे। जिस तरह से हिन्दू अपने मन्दिरो में पूजा करते थे, उसी प्रकार मुसलमान भी अपने पीरों की मजारों की पूजा करने लगे। हिन्दुओं ने उपासना की पद्वति में नृत्य–संगीत का समावेश किया था, जिसे मुसलमानों ने भी स्वीकार कर लिया। वस्तुतः मुसलमानों के संस्कार में जो बदलाव आया, वह पूर्णरूपेण हिन्दू संस्कारों की ही देन है।

सांस्कृतिक संदर्भ में यह बाहरी और भीतरी बदलाव अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। डॉ0 ताराचन्द्र ने अपनी पुस्तक ''इनफ्लुएंस आफ इस्लाम आन इण्डियन कल्चर'' में लिखा है– ''भारतीय जीवन के विभिन्न अंगो पर मुसलमानों का जितना अधिक प्रभाव पड़ा है, उसका उल्लेख कर सकना कठिन है। पर यह प्रभाव रीति–रिवाज, पारिवारिक जीवन की छोटी–मोटी बातों, संगीत, पोशाक, पाक–विधि, विवाह, त्यौहार और मेले, मराठा, राजपूत और सिक्ख राजाओं के धार्मिक तरीकों पर जिनता स्पष्ट और प्रत्यक्ष दीख पड़ता है, उतना अन्यत्र नहीं दीख पड़ता, हिन्दुओं और मुसलमानों का आचार–विचार आपस में इतना मिलता था कि उनके अजीब हिन्दुस्तानी तरीके पर उनका ध्यान गये बिना नहीं रह सका। उसके वंशजों ने उस पैतृक वस्तु को इतना अलंकृत और सम्पन्न बना दिया कि भारत उनसे उत्तराधिकार पर गर्व कर सकता है।''[7]

स्पष्टतया यह सब सहज सांस्कृतिक समन्वय का परिणाम था, जो प्रारंभ में उदासीनता और बाद में पूरे मनायोग से हुआ था। यह मिली–जुली संस्कृति हिन्दुस्तानी संस्कृति के नाम से जानी गयी और एक प्राणवान जीवन पद्वति का विकास करने में समर्थ हो सकी। इसी का परिणाम है कि भाषागत, जातिगत और सम्प्रदायगत विभिन्नता के बावजूद भी सम्पूर्ण भारत एक गहरी सांस्कृतिक एकता के सूत्र में बँध गया।

संदर्भ ग्रन्थ–

[1]. सत्यकेतु विद्यालंकार– ''भारतीय संस्कृति और उसका इतिहास, पृ0– 523

[2]. जवाहर लाल नेहरू– 'हिन्दुस्तान की कहानी' – पृ0– 307

[3]. ब्रिटिश पीटनी लैम्ब– भारत एक बदलती दुनिया– पृ0– 41

[4]. को0अ0 अन्तोनोवा– भारत का इतिहास पृ0– 293

[5]. डॉ0 रफीक जकरिया– बढ़ती दूरियाँ, गहराती दरार– पृ0– 34 राज प्रका0– (2000)

6. रामधारी सिंह, दिनकर– ''संस्कृति के चार अध्याय''– पृ0– 317

[7]. डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद– खंडित भारत, पृ0– 84